गोरखपुर महानगर : एक भू–सांस्कृतिक अध्ययन

हर्षिता सिंह
शोध छात्रा (शिक्षाशास्त्र)
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर,उत्तर प्रदेश

राप्ती और रोहिन के संगम पर अवस्थित गोरखपुर उत्तर प्रदेश (भारत) का एक प्रतिष्ठित महानगर है। यह महानगर नाथपन्थ के प्रवर्तक महायोगी गोरखनाथ की पुण्य स्मृति को सँजोए उनकी तपस्थली के कारण जाना जाता है। शिवावतारी महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ की कृपा–पात्र बनकर न केवल यह भूमि पवित्र हुई अपितु नाथपन्थ का सर्वोच्च केन्द्र होने का गौरव भी इसे प्राप्त हुआ। हिन्दू धर्म–संस्कृति से सम्बन्धित धार्मिक–आध्यात्मिक साहित्य को विश्वभर में सुलभ कराने वाला गीताप्रेस इस गोरखपुर महानगर की पहचान है। नित्यलीलालीन भाई जी हनुमानप्रसाद पोद्दार की कर्मस्थली इस गोरखपुर महानगर में महायोगी गोरखनाथ की एक तरफ जहाँ अखण्ड धूनी जली, वहीं सामाजिक परिवर्तन के अग्रदूत कबीर ने इसे अपनी मुक्तिस्थली बनायी। योगिराज बाबा गम्भीरनाथ की साधना एवं गोरक्षपीठाधीश्वर ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की शैक्षिक–सामाजिक परिवर्तन के अभियान से आधुनिक गोरखपुर जब अपने विकास की दिशा तय कर रहा था उसी समय साहित्य के नक्षत्राकाश पर मुंशी प्रेमचन्द, फिराक गोरखपुरी, पण्डित दशरथ प्रसाद द्विवेदी गोरखपुर की पहचान गढ़ रहे थे।

आजाद भारत का गोरखपुर महानगर जो आज शिक्षा, चिकित्सा, व्यापार के लिए पश्चिमी बिहार, नेपाल के तराई और पूर्वी उत्तर प्रदेश में अयोध्या, आजमगढ़, मऊ के भू–भाग के जनजीवन का केन्द्र बना हुआ है, उसका आरम्भिक इतिहास महायोगी गोरखनाथ के साथ ही प्रारम्भ होता है। गुरु श्री गोरखनाथ ने जब इस भूमि को अपनी तपस्यास्थली के रूप में चुना, उस समय अचिरावती अथवा राप्ती नदी के तट पर स्थित यह भू–क्षेत्र निश्चित रूप से वनाच्छादित निर्जन क्षेत्र रहा होगा, जो किसी महायोगी के एकान्तवास एवं योग–सिद्धि के अनुकूल रहा होगा।[1] यह कहना कठिन है कि व्यावहारिक योग प्रवर्तक महायोगी गोरखनाथ की यह तपस्थली कब जन–निवेश बनी और इसने कब गाँव–कस्बा–नगर का रूप धरण किया। ऐसी मान्यता है कि देवरिया

जनपद के रुद्रपुर के सतासी नरेश विश्राम सिंह निःसन्तान थे। उन्होंने उनवल राजवंश के राजकुमार होरिल अथवा मंगल सिंह को गोद लिया। मंगल सिंह ने गुरुश्री गोरखनाथ की तपस्थली के दक्षिण में एक छोटा–सा नगर बसाया जिसका नाम गुरु श्री गोरखनाथ जी की पुण्य स्मृति में गोरखपुर रखा जिसे बाद में सतासी राज्य की राजधानी बनाया।

उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल का यह भूभाग 'गोरखपुर' नगर की स्थापना से पूर्व प्राचीन भूगोल में आर्यावर्त के अन्तर्गत मध्यदेश के मध्य में विद्यमान कारूपथ का रमणीय प्रदेश था।[2] नगाधिराज देवात्मा हिमालय के चरण–तल में पुण्यसलिला सरयू, अचिरावती (राप्ती), हिरण्यवती (छोटी गण्डक), सदानीरा (बड़ी गण्डक) एवं अनोमा (आमी) आदि अनेक छोटी–बड़ी नदियों, ताल–तलैयों से सिंचित इस क्षेत्र के गर्भ में ही प्राचीनतम सभ्यता का उदय हुआ। यह पुण्यभूमि श्रेष्ठतम संस्कृति का वाहक बनने के साथ–साथ भारतीय धर्म–संस्कृति की क्रमिक विकास–यात्रा, अनेक शासन–प्रणालियों यथा गणतन्त्र राजतन्त्र, राजनीतिक घटनाक्रमों, राजवंशों के उत्थान–पतन, अनेक सांस्कृतिक आरोहों–अवरोहों, भारतीय इतिहास के कितने ही शलाका पुरुषों के अधीति बोधचरण प्रचारणों का मौन–मुखर साक्षी रहा है।

इक्ष्वाकुवंशीय अयोध्या राज्य का हिस्सा होने का गौरव प्राप्त यह क्षेत्र कभी रामराज्य का गवाह बना तो कभी महाराजा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में श्री गोरक्षनाथ को आमंत्रण देने हेतु महाबली भीमसेन के आगमन का।[3] महात्मा बुद्ध के युग में कपिलवस्तु के शाक्यों, रामगाम के कोलियों और पिप्पलिवन के मोरियों के गणतंत्रों के उत्थान–पतन का साक्षी यह क्षेत्र भारतवर्ष के महान् शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय, विक्रमादित्य एवं सम्राट हर्ष के साम्राज्य का हिस्सा रहा है तथापि सतासी नरेश मंगल सिंह द्वारा गोरखपुर की स्थापना के पूर्व किसी राजनीतिक–सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में कोई उल्लेख प्राप्त नहीं होता।

गोरखपुर नगर के नामकरण पर भी विद्वानों में मतैक्यता नहीं है। वस्तुतः गोरखपुर के नामकरण अथवा अभिधान पर विद्वानों के अलग–अलग मत हैं। विद्वानों के एक वर्ग की मान्यता है कि गोरखपुर का नाम नाथपन्थ के प्रवर्तक गुरु श्री गोरखनाथ के आधार पर पड़ा। अनुश्रुति है कि पंजाब से आये शिवावतारी गोरखनाथ ने यहाँ की प्रसिद्ध देवी

गोरक्षा की स्थापना की थी।[4] यहीं उन्होंने अपनी धूनी रमायी तथा नाथ–सम्प्रदाय के सिद्धान्तों, योगमार्ग एवं गोरक्षसिद्धान्तसंग्रह का भी प्रणयन किया इसीलिए लोकमानस में उनकी साधनाभूमि का यह क्षेत्र गोरखपुर कहा जाने लगा।[5] गोरखपुर के नामकरण के सम्बन्ध में कतिपय अभिलेखीय साक्ष्य भी उपलब्ध हैं। कलिंजर के बुन्देल राजा प्रताप रुद्रसेन के 1486 ई. के कलिंजर प्रशस्ति में गोरखपुर का उल्लेख आया है जिसे कतिपय विद्वान वर्तमान गोरखपुर ही मानते हैं।[6] 16वीं शताब्दी में मुगल शासक अकबर के समय इसे 'गोरखपुर सरकार' कहा जाता था। अवध के नवाबी शासन तथा उसके बाद के ब्रिटिश राज्य में भी इसे इसी नाम से अनेकशः उल्लिखित किया गया।[7] उल्लेखनीय है कि श्री गोरखनाथ मन्दिर के समीप का क्षेत्र आज भी पुराना गोरखपुर कहलाता है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्राचीन गोरखपुर राप्ती–रोहिन संगम के क्षेत्र में बसा पुराना गोरखपुर और डोमिनगढ़ का क्षेत्र ही रहा होगा। डॉ. राजबली पाण्डेय ने गोरखपुर के नामकरण को महाभारत के अनुश्रुति के आधार पर यह मत व्यक्त किया है कि पाण्डवों द्वारा राजा विराट के गौरव की रक्षा इसी स्थान पर की गयी थी। योगासन तथा गोचारण का अनुकूल क्षेत्र होने के कारण यह क्षेत्र सम्भवतः गोरक्षा के लिए भी प्रसिद्ध रहा होगा।[8] इसके नामकरण के पीछे डॉ. राजबली पाण्डेय का यह मत मात्र अनुमान पर आधारित है। इस मत की पुष्टि का कोई स्पष्ट ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है। वस्तुतः गोरखपुर के नामकरण पर जो भी अनुश्रुतियाँ या साक्ष्य उपलब्ध हैं उनमें सबसे उपयुक्त यह मत ही स्वीकार्य लगता है कि इस क्षेत्र का गोरखपुर नाम नाथपन्थ के प्रवर्तक गुरु श्री गोरखनाथ के नाम के आधार पर ही पड़ा होगा। उल्लेखनीय है कि गोरखपुर नगर का उद्‌भव एवं विकास जितना पुराना है, महायोगी गोरखनाथ की तपस्थली एवं उनकी उपस्थिति उससे भी पूर्व दिखाई देती है। इस शहर का नामकरण कदाचित् बदला भी। उल्लेखनीय है कि औरंगजेब के शासनकाल में शहजादा मुअज्जम शिकार खेलने गोरखपुर आया। गोरखपुर पर उसने कुछ समय के लिए अपना अधिकार स्थापित कर इसे अपनी छावनी बनाया और गोरखपुर का नाम बदलकर अपने नाम पर मुअज्जमाबाद रखा किन्तु यह नाम अस्थायी सिद्ध हुआ और प्रचलन में गोरखपुर नाम चलता रहा। 1801 ई. की एक सन्धि में अवध के नवाब ने गोरखपुर और आसपास के क्षेत्रों को अंग्रेज शासकों को दे दिया। अंग्रेज

शासकों द्वारा जनप्रचलित गोरखपुर नाम को ही स्वीकृति प्रदान की गयी और इसे गोरखपुर ही कहा जाने लगा जो आज भी प्रसिद्ध है।[9]

गोरखपुर उत्तर प्रदेश राज्य में $26^{0}46'$ उत्तरी अक्षांश तथा $83^{0}22'$ पूर्वी देशान्तर पर राप्ती एवं रोहिन नदी के संगम पर पूर्व दिशा में स्थित है। राप्ती नदी इस नगर के उत्तर–पश्चिम से आकर नगर के पश्चिमी भाग में सीधे दक्षिण की ओर मुड़ जाती है। जबकि रोहिन नदी उत्तर दिशा से दक्षिण दिशा की ओर बहती हुई इस नगर के मध्य पश्चिम में मिल जाती है। गोरखपुर महानगर वन, जलाशय एवं उर्वरा भूमि से सम्पन्न रहा है। यह महानगर दिल्ली–गौहाटी बड़ी लाइन रेलमार्ग पर लखनऊ से 262 किमी. पूर्व की ओर स्थित है। यह शहर शिक्षा, चिकित्सा, व्यापार, उद्योग की दृष्टि से नेपाल की तराई, पश्चिमी बिहार के लोगों का प्रमुख केन्द्र है। वाराणसी की सीमा से उत्तर एवं लखनऊ की सीमा के पूर्व के क्षेत्र में गोरखपुर समुद्रतल से 329 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। राष्ट्रीय राजमार्ग–28 दिल्ली–मोकामा मार्ग गोरखपुर के दक्षिणी छोर से गुजरता है एवं राष्ट्रीय राजमार्ग–29 गोरखपुर–वाराणसी राजमार्ग इसके पश्चिमी छोर से शुरू होता है। गोरखपुर नगर का भू–भाग हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों से नदियों द्वारा लायी गयी अवशिष्ट निक्षेपित कर निर्मित हुआ है जिससे इस क्षेत्र को इस जमाव के कारण भूमिगत जल के अन्तःस्राव व निःसारण कर उपयोग करने में सरलता होती है। नगर का बसाव एक कटोरे की आकृति का है जिससे मध्यवर्ती भाग में ऊँचाई अपेक्षाकृत कम है। महानगर का पूरा विस्तारित क्षेत्र अब समतल मैदानी क्षेत्र की तरह है जिसकी ऊँचाई दक्षिण एवं दक्षिण–पश्चिम में 72 मीटर से उत्तरी भाग में 95 मीटर तक है। उत्तरी भाग की सामान्यतः ऊँचाई 85 मीटर के आसपास है जो क्रमशः दक्षिण की ओर कम हो जाती है। दक्षिणी भाग की ऊँचाई अपेक्षाकृत कम 75–80 मीटर के मध्य है। राष्ट्रीय राजमार्ग–28 के दक्षिण की ऊँचाई 70–72 मीटर के मध्य है। इस प्रकार ऊँचाई की दृष्टि से नगर को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है जिसकी विभाजक रेखा रेलवे लाइन है अर्थात् रेलवे लाइन के उत्तर का क्षेत्र अधिक ऊँचा एवं दक्षिण का क्षेत्र अपेक्षाकृत नीचा है।[10] गोरखपुर महानगर की भू–आकारिकी का विकास राप्ती नदी के मार्गपरिवर्तन के कारण ही हुआ है जिसके परिणामस्वरूप नगर क्षेत्र को अनेक ताल–पोखरे, निम्न भूमि एवं नदी के छाड़न क्षेत्र उपस्थित थे। 1916–17 के

उपलब्ध भारतीय संरक्षण के मानचित्र के अनुसार नगर क्षेत्र में कुछ छोटे–बड़े लगभग 230 ताल–पोखरे थे जिनका कुल क्षेत्रफल लगभग 4.57 वर्ग किमी. था। स्वतन्त्रताप्राप्ति के बाद भी नगर निगम के दस्तावेजों के अनुसार 170 ताल–पोखरे मौजूद थे। गोरखपुर नगर का आकार बढ़ने के साथ–साथ 2006 में जिला प्रशासन द्वारा छोटे–बड़े ताल–पोखरों एवं गड्ढों की कुल संख्या 514 बतायी गयी। गोरखपुर महानगर की पहचान रामगढ़ताल इस नगर का एक प्रमुख जलस्रोत है। गोड़धोइया एवं बिछिया शहर के बीच दो प्रमुख नाले हैं जिनकी लम्बाई क्रमशः 12.5 एवं 10 किमी. है जिसका कुल जलबहाव क्षेत्र 120 वर्ग किमी. है।[11] गोरखपुर महानगर में तेजी से बढ़ते जलदबाव, विकसित होतीं आवासीय कॉलोनियों ने जलीय क्षेत्रों को कम किया है। एक आँकड़े के अनुसार शहर में छोटे तालाबों इत्यादि का क्षेत्रफल 4.57 वर्ग किमी. से घटकर अब मात्र 2.00 वर्ग किमी. रह गया है। अर्थात् जलीय क्षेत्रों के क्षेत्रफल 2014 से 2017 के मध्य लगभग 50.1 प्रतिशत कम हो गये।[12]

शहर के प्रमुख ताल कौआबाग, असुरन, तकिया, कवदहा, भेड़ियागढ़, सुमेर सागर, जटाशंकर, पुर्दिलपुर, महादेव झारखण्डी इत्यादि का क्षेत्रफल या तो अत्यधिक कम हुआ तथा इनमें से कुछ का अस्तित्व समाप्त हो चुका है। उल्लेखनीय है कि ये ताल–पोखरे शहर के वर्षाजल के भण्डारगृह थे। एक तरफ जहाँ यहाँ पारिस्थिकी सन्तुलन बनाये रखने में सहयोग करते थे वहीं दूसरी ओर भूगर्भ–जल के पुनः संवहन एवं सतही जल के स्रोत भी थे जिनके ह्रास के कारण सम्पूर्ण नगर थोड़ी–सी बरसात में ही जलप्लावित होने लगता है।[13]

गोरखपुर का यह भू–भाग वैदिक कारूपथ के अन्तर्गत था। प्राचीनकाल में आर्यावर्त के मध्यवर्ती भू–भाग मध्यक्षेत्र को कारूपथ ही कहते थे। ऋग्वेद के कारू का अर्थ कवि अर्थात् कारूपथ का तात्पर्य था कवियों का देश। इस प्रकार यह क्षेत्र ज्ञान एवं काव्यसर्जना की भूमि रही है। संस्कृत में कारू का अर्थ निर्माता, कर्ता, अभिकर्ता, कारीगर, शिल्पकार एवं कलाकार होता है।[14] अतः गोरखपुर की यह भूमि शास्त्र एवं शिल्प की सर्जनाभूमि भी रही है। यह क्षेत्र वैदिक ऋषि गौतम राहुगढ़ के संचरण का वह पुनीत क्षेत्र था जहाँ से वे सदानीरा अर्थात् बड़ी गण्डक के किनारे पहुँचते थे। विदेहमाधव व गौतम राहुगढ़ को सदानीरा पहुँचने के लिए गोरखपुर जनपद से होकर

गुजरना पड़ता था। गौतम राहुगढ़ अंगिरा कुल के प्रसिद्ध ऋषि थे जिनके 20 सूत्र ऋग्वेद में संगृहीत हैं। इस क्षेत्र में उनका प्रवास 2000 ईसापूर्व से बहुत पहले ही हो चुका था। इससे यह प्रमाणित होता है कि गोरखपुर ऋग्वेदीय संस्कृति केन्द्रों में एक से एक था।[15]

गोरखपुर जिले के दक्षिण भाग में स्थित इमलीडीह नामक स्थल के उत्खनन से हड़प्पा सभ्यता में प्रचलित शैलावड़ी पत्थर के अत्यन्त लघु आकार के मनके मिलते हैं जो इस बात के प्रमाण हैं कि सरस्वती घाटी सभ्यता के समय गोरखपुर भू–क्षेत्र पर प्राचीन बस्ती का अस्तित्व रहा होगा। गोरखपुर क्षेत्र का इतिहास साहित्यिक स्रोतों के आधार पर प्राग्वैदिक युग से दिखाई देने लगता है। यह क्षेत्र इक्ष्वाकुवंशीय शासकों के राज्य अयोध्या के अन्तर्गत शासित था। इक्ष्वाकु के पुत्र मिथि ने इसी क्षेत्र से जाकर मिथिला नगर बसाया था। इक्ष्वाकुवंशीय शासकों यथा– सगर, दिलीप, अम्बरीष, सुदास, रघु, दशरथ, राम, लक्ष्मण इत्यादि के शासनकाल का हिस्सा था। श्रीराम के राज्यारोहण के बाद लक्ष्मण के पुत्रों अंगद एवं चन्द्रकेतु को क्रमशः कारूपथ की पश्चिमी एवं उत्तरी भूमि में माण्डलिक राजा के रूप में अभिषिक्त कराया गया था। वे निश्चित रूप से इसी क्षेत्र के माण्डलिक राजा रहे होंगे। रामायण में कारूपथ को रमणीय एवं निरामय देश बताया गया है।[16]

गोरखपुर एवं उसके परिक्षेत्र का ऐतिहासिक युग में उल्लेख छठीं शताब्दी ईसापूर्व के महाजनपद एवं गणराज्यों के समय से मिलने लगता है। महात्मा बुद्ध के कालखण्ड में यह क्षेत्र राज्यतन्त्र एवं गणतन्त्र के संयुक्त शासन प्रणाली का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण क्षेत्र था। कपिलवस्तु के शाक्य, रामग्राम के कोली एवं पिप्पलिवन के मोरियो (मौर्य) का यह केन्द्रबिन्दु था। वस्तुतः वैदिक कर्मकाण्ड में व्याप्त पाखण्ड के शमन के लिए खड़े जैन एवं बौद्ध मत के दो महान प्रवर्तकों के विचार प्रवाह से यह क्षेत्र आच्छादित था। और यह गोरखपुर के गौरवमयी इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ है। रामग्राम के कोलियों की राजधानी वर्तमान गोरखपुर में स्थित रामगढ़ थी।[17] इस गणराज्य का विस्तार गोरखपुर की सदर तहसील एवं बाँसगाँव के दक्षिणी भाग तक था। मौर्यों की राजधानी पिप्पलिवन भी आधुनिक गोरखपुर महानगर से सटे दक्षिण–पूर्व गोर्रा नदी के तट पर स्थित राजधानी नामक गाँव था। इस प्रकार ऐतिहासिक युग में आज से लगभग 2500

वर्ष पूर्व यह नगर धर्म, अध्यात्म, दर्शन और राजनीतिक वैचारिक अधिष्ठान का प्रमुख केन्द्र था।

शुंग शासकों के समय गोरखपुर उनके अधीन रहा होगा। शकों एवं कुषाणों की कुछ मुद्राएँ गोरखपुर परिक्षेत्र से प्राप्त होती हैं, जिसके आधार पर यह माना जाता है कि ईसवीसन् के आसपास इस क्षेत्र पर भी विदेशी आक्रान्ताओं का किंचित् असर हुआ। तीसरी–चौथी शताब्दियों में जब मगध साम्राज्य के क्षितिज पर गुप्त सम्राटों का आधिपत्य स्थापित हुआ, उस समय गोरखपुर का यह क्षेत्र पुनः उनके शासन का एक हिस्सा बना। चीनी यात्री फाह्यान अपनी यात्रा के दौरान कपिलवस्तु, लुम्बिनी, रामग्राम एवं कुशीनगर जैसे स्थानों का वर्णन अपने यात्रा–वृत्तान्त में विस्तार से करता है। उल्लेखनीय है कि रामग्राम की पहचान अनेक विद्वानों ने गोरखपुर महानगर के रामगढ़ताल के रूप में की है। इस प्रकार गुप्तयुगीन शासकों के शासनकाल तक गोरखपुर नगर का अस्तित्व रामग्राम के रूप में दिखाई देता है। गोरखपुर और उसका यह क्षेत्र दीर्घकाल तक इस क्षेत्र पर राजनीतिक उतार–चढ़ाव व राजसत्ताओं के उत्थान–पतन का साक्षी रहा किन्तु रामग्राम के बाद गोरखपुर किसी राजनीतिक केन्द्र के रूप में कहीं दिखाई नहीं देता। यद्यपि कि इसके आसपास से मिले प्रतिहार राजा मिहिरभोज और द्वितीय महेन्द्रपाल के समय के ताम्रपत्र (क्रमशः धुरियापार एवं दिघवा दुबौली से प्राप्त), गोविन्दचन्द गहडवाल के पाली और गगहा से प्राप्त अभिलेख इस गोरखपुर के आसपास के क्षेत्रों पर राजनीतिक सत्ताओं के प्रभाव के प्रमाण हैं।

वस्तुतः गोरखपुर की संस्कृति सम्बोधि की संस्कृति रही है। तथागत का आदर्श एवं गोरखनाथ का जीवनदर्शन यहाँ के जीवन का आदर्श रहा है। गोरखपुर के 12वीं शताब्दी ईसवी का इतिहास साक्षी है कि यह काल एक संक्रमण काल है। मोहम्मद गोरी के विजय अभियानों के कारण यहाँ राजनीतिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को नवीन युगबोध के साथ उभरने–उबरने का अवसर मिला। राजनीतिक आतंक, उपेक्षा, निरंकुशता तथा जंगलों के विस्तार, बाढ़ इत्यादि आर्थिक कारणों से प्रभावित गोरखपुर का यह क्षेत्र उठता–गिरता रहा इसलिए नागरिक जीवन का विस्तार कम दिखाई देता है। तत्पश्चात् यह क्षेत्र सल्तनत काल, मुगलकाल तथा ब्रिटिशकाल के अन्तर्गत सम्मिलित माना जाता रहा है।

सन्दर्भ :

1. श्री गोरखनाथ मन्दिर द्वारा प्रकाशित 'श्री गोरखनाथ मन्दिर एवं गोरखपुर का इतिहास', नवीन संस्करण 2022, पृ. 19
2. वही
3. महाराजा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में श्री गोरखनाथ जी को आमन्त्रण देने हेतु महाबली भीमसेन के आगमन की स्मृतियाँ श्री गोरखनाथ मन्दिर में स्थित भीम सरोवर एवं उसके निकट महाबली भीम सेन की शयन मुद्रा की मूर्ति।
4. गोरखपुर गजेटियर, 1987, पृष्ठ 1
5. तिवारी, दिवाकर प्रसाद, गोरखपुर परिक्षेत्र का इतिहास, पुरोवाक्, पृष्ठ 3
6. राव, यशवन्त, गोरखपुर क्षेत्र, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिक्षेत्र, पृष्ठ 2; प्रागधारा अंक 9, 1998–99, पृष्ठ 151 (उ.प्र. राज्य पुरातत्त्व संगठन लखनऊ की शोध पत्रिका)
7. तिवारी, दिवाकर प्रसाद, गोरखपुर परिक्षेत्र का इतिहास, पुरोवाक–3; नेविल एच.आर.ए. गजेटियर, गोरखपुर, पृष्ठ 178
8. द्रष्टव्य, पाण्डेय, वेद प्रकाश द्वारा सम्पादित 'शहरनामा गोरखपुर, प्रथम संस्करण, पृष्ठ 44
9. श्री गोरखनाथ मन्दिर द्वारा प्रकाशित – श्री गोरखनाथ मन्दिर एवं गोरखपुर का इतिहास, पृष्ठ–20
10. वर्मा, शिवशंकर, 'भौगोलिक परिदृश्य', पृष्ठ–34, द्रष्टव्य– डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय द्वारा सम्पादित 'शहरनामा गोरखपुर'
11. वर्मा, शिवशंकर, 'भौगोलिक परिदृश्य', पृष्ठ–34, द्रष्टव्य– डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय द्वारा सम्पादित 'शहरनामा गोरखपुर'
12. वर्मा, शिवशंकर, 'भौगोलिक परिदृश्य', पृष्ठ–34, द्रष्टव्य– डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय द्वारा सम्पादित 'शहरनामा गोरखपुर'
13. वर्मा, शिवशंकर, 'भौगोलिक परिदृश्य', पृष्ठ–34, द्रष्टव्य– डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय द्वारा सम्पादित 'शहरनामा गोरखपुर'
14. वामन शिवराम आप्टे, संस्कृत–हिन्दी कोष, पृष्ठ 269
15. सिंह, शिवाजी, ऋग्वैदिक आर्य एवं सरस्वती सिद्ध सभ्यता, पृष्ठ 26–27
16. मिश्र, रामप्यारे, 'मंथन 2018', गोरखपुर महोत्सव समिति द्वारा प्रकाशित
17. वही